देश दर्शन

पूर्ण संख्या—४०

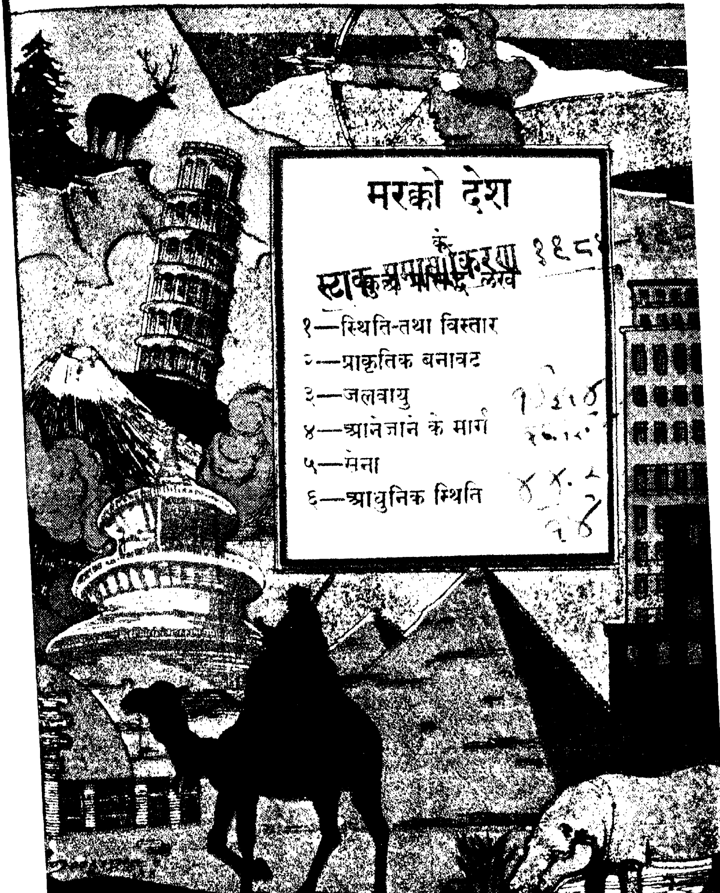

मरक्को देश

के मुख्य मुख्य लेख

स्टाक सत्यापीकरण १९८

१—स्थिति-तथा विस्तार
२—प्राकृतिक बनावट
३—जलवायु
४—आने जाने के मार्ग
५—सेना
६—आधुनिक स्थिति

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

दिसम्बर १९४२] **देश-दर्शन** [मार्गशीर्ष १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४]

मरक्को

संख्या ६
पूर्ण संख्या ४०

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-
Foreign	Rs. 6/-
This copy	As. -/6/-

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—स्थिति तथा विस्तार	...	...	१
२—प्राकृतिक बनावट	...	...	२
३—जलवायु ...	...	...	७
४—बनस्पति तथा पशु	...	...	९
५—जन-संख्या	...	...	१०
६—आने जाने के मार्ग	...	...	१७
७—व्यापार ...	...	...	१७
८—सेना ...	...	...	१८
९—संक्षिप्त इतिहास ...	...	...	२०
१०—आधुनिक स्थिति	...	...	२८

मार्च १९३९ से अक्टूबर १९४२ तक देश-दर्शन के निम्नाङ्क प्रकाशित हो चुके हैं:—

लङ्का, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेनमार्क, हालैंड, रूस, थाई (श्याम) देश, बल्गेरिया, अल्सेस लारेन, काश्मीर, जापान, ग्वालियर, स्वीडन, मलयप्रदेश, फिलीपाइन, तीर्थ दर्शन, हवाई द्वीपसमूह, न्यूज़ीलैंड, न्यूगिनी, आस्ट्रेलिया, मेडेगास्कर, न्यूयार्क, सिरिया, फ्रांस, अल्जीरिया और मरक्को।

एक प्रति ।=) वार्षिक मूल्य ४)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, ककरहाघाट, प्रयाग।

स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

मरक्को उत्तरी अफ्रीका का एक देश है। अल्जीरिया और ट्यूनिशिया को मिला कर यह एक बड़ा भौगोलिक प्रदेश बन जाता है। यह अरब के भौगोलिक विशेषज्ञों का जज़ीरुल मग़रिब (पश्चिम का द्वीप) कहलाता है। इसे योरुपीय लोग बारबारी कहते हैं। यह देश ३५° से २६° तक उत्तरी अक्षांश और १० से १° अंश तक पश्चिमी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में भूमध्यसागर, उत्तर-पश्चिम में अटलांटिक सागर, दक्षिण में सहारा और पूर्व की ओर अल्जीरया देश है। १८४५ ई० में फ्रांस और मरक्को में अल्जीरिया की सीमा के सम्बन्ध में सन्धि हुई। जिसके अनुसार समुद्र तट से ६७ मील की दूरी (टनीटेरुसामी) तक सीमा स्थाई बना दी गई। इसके आगे मरक्को और अल्जीरिया के गाँवों तथा जातियों से सीमा का अनुमान किया जाता था। सीमा साफ तौर पर अङ्कित न होने के कारण फ्रांस मुलूया की प्राकृतिक सीमा का अधिकार नहीं प्राप्त कर सका और बहुत सी कठिनाइयां उत्पन्न हुईं।

१९१२ ई० में मरक्को में फ्रांसीसी छत्रछाया की स्थापना हुई। तब से प्राकृतिक सीमा का प्रश्न मिट सा गया है। मरक्को का समस्त क्षेत्रफल २,०३,११७ व० मील है जो अपने संयुक्त प्रान्त से प्रायः दुगुना बड़ा है। फ्रांसीसी प्रदेश का क्षेत्रफल ४,१५,००० वर्ग किलोमीटर और स्पैनिश प्रदेश का १०४,६०० वर्ग किलोमीटर है। टैंजियर का अन्तर्राष्ट्रीय प्रदेश ३८० वर्ग किलोमीटर है।

प्राकृतिक बनावट

बनावट के अनुसार मरक्को के तीन बड़े भाग किये जा सकते हैं। १—भूमध्यसागर का तटीय प्रदेश जो स्बू और उसकी सहायक नदियों द्वारा अटलस पर्वत से अलग है। २—पश्चिमी मरक्को के मैदान तथा पठार ३—एटलस पर्वत और भिन्न भिन्न शाखाएँ जो सहारा की ओर जाती हैं।

१—तटीय प्रदेश के तीन भाग हैं। पश्चिमी भाग जेबेला, मध्यवर्ती रिफ और पूर्व की ओर गारेट का प्रदेश है। तटीय प्रदेश पहाड़ी है। पहाड़ी

श्रेणियाँ समुद्र तट पर गोलाकार खाड़ियाँ बनाती हैं। इस प्रदेश में टैंजियर, कसादेससेरिर, सेउटा, टेट्वान, बादिस और अल्हूसेमास की खाड़ियाँ हैं। ट्रे-फोरकास अन्तरीप के पूर्व मेलीला की खाड़ी स्थित है। मुलूया नदी के मुहाने के समीप ही जफराइन द्वीप स्थित है। चेचौबेन और कुर के मध्य सबसे ऊँची (जेबेल टिजोरेन २५०० मीटर। १ मीटर = १ गज ३३/८ इंच) चोटियां हैं। पहाड़ों के बीच में बड़ी बड़ी पहाड़ी कंदराएँ हैं।

२—पश्चिमी मरक्को के मैदान और पठार अटलांटिक सागर से एटलस पर्वत तक फैले हुये हैं। इनमें दो भिन्न-भिन्न प्रदेश हैं १—एल-गर्ब और एल हूज़ या मरकेश के प्राचीन राज्य। एलगर्ब की पहाड़ियां लुक्कोक और स्बू के कछारी मैदान बनाती हैं। लुक्कोस नदी की स्चुअरी पर लरचे और स्बू के तट पर मेहेदिया के बन्दरगाह हैं। स्बू नदी मध्यवर्ती एटलस पर्वत से निकलती है। आरम्भ में इसका नाम वाद ग्विगो है। ज के समीप इसमें इनावेन नदी आकर मिलती है। इनावेन नदी टाज़ा कारीडर का जल वाद ग्विगो में लाकर गिराती है। वेरा नदी तटीय प्रदेश के दक्षिणी

ढाल का पानी लाती है। वादमिक्केस और वाद रदोम और वाद बेहत नदियां बाईं ओर से आकर स्बू नदी में गिरती हैं। स्बू नदी नीचे की ओर आकर दलदली प्रदेश में बिखर जाती है। मेरचा-बेल-कसीरी तक स्बू नदी में नावें चल सकती हैं। समुद्र के हटने से अधिक से अधिक प्राचीन चिन्ह पाये जाते हैं। तटीय मैदान (जिसमें शाऊजा, दुकाला और अब्दा प्रान्त स्थित है) ४० से ५० मील तक चौड़ा है। यह मैदान बड़ा उपजाऊ है। काली मिट्टी वाली भूमि जो तिर्स कहलाती है वह बहुत अधिक उपजाऊ है। सिंचाई की सुविधा के कारण एटलस पर्वत के नीचे भी खेती होती है। बू-रेगराग नदी रबात स्थान पर समुद्र में गिरती है। उमरबिया नदी उत्तरी-पश्चिमी अफ्रीका की सबसे बड़ी नदी है। यह नदी एटलस पर्वत के मध्यवर्ती भाग से निकलती है। पहले यह एक गहरी संकरी घाटी में होकर रवेनीफ्रा स्थान तक बहती है उसके बाद तादला के मैदान को पार करती है। बादुल-उबय्यद और तेसौन नदियां इसमें आकर मिलती हैं। बाद रदात रिरय्या, उड़ी का और फी नदियां एटलस का पानी

लाती हैं। मेसेटा तट समतल है। इसके किनारे किनारे बालू की पहाड़ियां हैं। मैदान में कई छिछले अनूप हैं।

३—मरक्को के एटलस पर्वत के उत्तर में अटलांटिक तटीय ढालू प्रदेश के मैदान तथा पठार और टाजा कारीडर के दक्षिण वादद्रा नदी की ओर यह पर्वत ढालू हो गया है। इसके आगे सहारा प्रदेश है। मरक्को एटलस पर्वत में तीन श्रेणियां हैं। एक श्रेणी दक्षिण, दूसरी पश्चिम और तीसरी उत्तर-पूर्व की ओर जाती है। मध्यवर्ती एटलस पर्वत में बरफ खूब पड़ती है। वहीं से मरक्को देश को पानी मिलता है। इस भाग से रबू, वाद बेहत, बू, रेगराग उमरबिया आदि नदियां निकलती हैं। ऊँचे तथा मध्यवर्ती एटलस पर्वतों से जो कोण बनता है वहीं मुलूया के ऊपर घाटी स्थित है। रिज़ीन्टेल्मेरेट दर्रे द्वारा ऊँचा एटलस दो भागों में बँटा है। टिज़ी बर्बर भाषा का अक्षर है इसका अर्थ दर्रा है। यहां तुबकाल बेनक्रिम और लिकूम्त की चोटियां हैं। इस ऊँची श्रेणी से एटलस पर्वत के दो भाग हो जाते हैं। टिजिनटेलेमेट के पूर्व एटलस पर्वत

का अंत हो जाता है और वह टूट कर कई ऊँची ऊँची श्रेणियों में विभाजित हो जाता है। यह श्रेणियां मैदानों द्वारा एक दूसरे से अलग हो गई हैं। आगे चल कर एटलस पर्वत और अल्जीरिया के सहारा पर्वत से मिल जाता है। ऊँचे एटलस पर्वत के दक्षिण एक श्रेणी ऊँचे एटलस पर्वत को एंटी एटलस पर्वत से मिलाती है। एंटी एटलस पर्वत और दूसरे पर्वतों से भिन्न है। पूर्व की ओर पठार नहीं है और यह अपनी समीपवर्ती भूमि से कुछ ही ऊँचा है। सूस की घाटी ऊँचे एटलस पर्वत के सिर्वा तथा एंटी एटलस श्रेणियों द्वारा बनी है। सिर्वा के पूर्व छोटी छोटी पहाड़ी नदियां हैं। वादज़िज में तोड़गा नदी बहती है। यह नदी नीचे की ओर फेर्कला और गेरिस नाम से प्रसिद्ध है। ताफीलेत में इस नदी का अंत हो जाता है। सहारा की घाटियों में ओसिस मरु द्वीप या नखलिस्तान तथा सिंचाई द्वारा बनाये हुये प्रदेश हैं।

जलवायु

मरक्को की जलवायु भूमध्यसागरीय है। मरक्को में भूमध्यसागर और अटलांटिक सागर दोनों की प्रचलित हवाओं से वर्षा होती है। इसलिये यहां की जलवायु उत्तरी अफ्रीका के और दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक अच्छी है। इसके ऊँचे पर्वतों पर और दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक समय तक बरफ रहती है। पश्चिमी तट की जलवायु शीतल है। मोगदोर का जनवरी मास का सबसे नीचा ताप ६१·५° और अगस्त मास का सबसे नीचा ताप ७२·३° है। भीतर की ओर जलवायु अधिक स्थली हो जाती है जिससे शीतकाल में अधिक सरदी पड़ती है और गरमी के दिनों में बहुत गरमी रहती है। यहां अक्तूबर और नवम्बर तथा अप्रैल और मई में वर्षा होती है। भीतर की ओर व्यापारिक हवाओं के प्रदेश की ओर वर्षा काल छोटा होता जाता है। शरद तथा ग्रीष्म ऋतुओं में सरदी और गरमी भी अधिक कड़ी नहीं पड़ती है। फ़ेज़ स्थान पर जनवरी मास का सबसे नीचा तापक्रम ५०° और अगस्त मास का ८०·६° है। टैञ्जियर में साल में लगभग ३५ इञ्च, मज़गन में १७ इञ्च, मोगादोर में १२ इञ्च वर्षा होती है। तट पर

ओस बहुत अधिक पड़ती है। भीतर की ओर वर्षा कम होती जाती है परन्तु पश्चिमी ढालों पर लगभग १२ इञ्च पानी साल में बरसता है। जेबाला देश, पश्चिमी मध्य एटलस में सबसे अधिक वर्षा होती है। मेक्नेस और फ़ेज़ प्रदेश, टाज़ा में पश्चिमी नम हवायें आती हैं और पानी बरसाती हैं। मेक्नेस में २२ इँच, फेज़ में २० इञ्च और टाज़ा में २४ इञ्च वर्षा होती है। पूर्वी मरक्को ऊँचे पहाड़ों के कारण मौसमी हवाओं से अलग हो जाता है। मेलिला में १६ इञ्च, उद्जा में १४ इञ्च, बेर्गवेंट बेनी यूनिफ और बू देनीब में ५ इञ्च वर्षा होती है। ३ हज़ार फुट की ऊँचाई के ऊपर साल में कई बार बरफ गिरती है और अधिक ऊँची चोटियों की बरफ ग्रीष्म काल के मध्य में साफ हो पाती है।

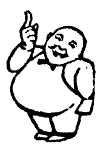

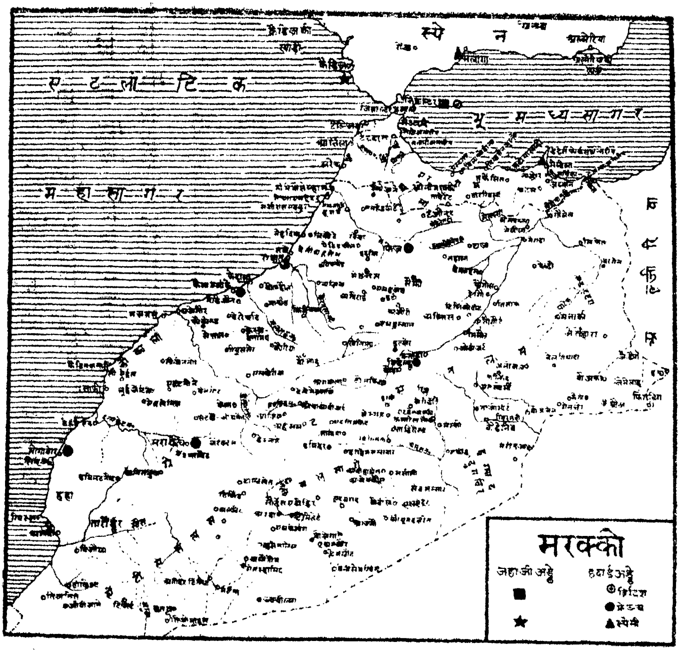
मरक्को
जहाजी अड्डे
हवाई अड्डे
ब्रिटिश
फ्रेंच
स्पेनी
एटलांटिक
महासागर
भूमध्यसागर
स्पेन

फेज़ नगर की दीवार के पास बाब महरूक के बाज़ार में ऊन का सौदा। मरक्को के देहाती लोग अपनी भेड़ों की ऊन शहर में बेचने आते हैं। सफेद पोश शहरी लोग ऊन को जांच कर कस कर दाम देते हैं।

वनस्पति तथा पशु

जलवायु का वनस्पति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिये मरक्को की वनस्पति भी जलवायु के अनुसार भिन्न-भिन्न है। शीतकाल में वर्षा होने के कारण मरक्को की अधिकांश वनस्पति भूमध्य सागरीय है। दक्षिण की ओर कुछ पौधे मिलते हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर विचित्र पौधे पाये जाते हैं। पर्वतों की वनस्पति योरुपीय तथा अल्प्स पर्वतों की सी है। अधिक वर्षा वाले प्रदेशों में वन हैं। पश्चिम की ओर के वनों को मनुष्य ने साफ कर डाला है। शाह बलूत के वृक्ष और कोणधारी पत्तियों वाली वनस्पति अधिक है। ममोरा कावज़ बन में कार्क वाले बलूत का वृक्ष पाया जाता है। मध्यवर्ती एटलस पर्वत में देवदार का बड़ा बन है। घास, झाड़ियों के प्रदेश भी भिन्न भिन्न स्थानों में वर्तमान हैं। जब वर्षा होती है तो स्टेपी में घास खूब उगती हैं नहीं तो रेगिस्तान रहता है। पशु भी भूमध्य सागरीय पाये जाते हैं। अब मरक्को के बनों में शेर नहीं पाया जाता है। तेंदुआ बनों में बहुत हैं। लोमड़ियाँ तथा सियार बहुत पाये जाते हैं।

देश दर्शन

जनसंख्या

मरक्को के प्रधान निवासी बर्बर लोग हैं। वह अपने को इमाज़िरेन कहते हैं। बर्बर लोग बड़े अद्भुत ढंग के होते हैं। अधिकांश बर्बर लोग आइबेरी-लिगूरियन जाति के मालूम होते हैं। हमिरिक जाति के लोग भी पाये जाते हैं। कुछ लोगों की रूप रेखा नार्डिक जाति के लोगों की सी है। मरक्को के बर्बर लोगों के तीन प्रधान समूह हैं। यह आपस में एक दूसरे से भाषा, जाति और रीति रिवाज में भिन्न हैं। १—उत्तरी या रिफ लोग जो तटीय प्रदेश में रहते हैं। २—मध्यवर्ती या बर्बर वर्ग के लोग ऊँचे एटलस पर्वतीय प्रदेश में रहते हैं। ३—दक्षिणी या चल्यूय वर्ग ऊँचे एटलस तथा सूस प्रदेश में निवास करता है।

मैदान के बर्बर लोग तथा मुसलिम प्रदेश के लोग अरबी भाषा का प्रयोग करते हैं। परन्तु भौगोलिक स्थिति के कारण मरक्को पर पूर्वी भूमध्य सागर का प्रभाव ट्यूनिशिया तथा अल्जीरिया की अपेक्षा कम पड़ा है। मिस्र और एशिया से आने वाली जातियां धीरे धीरे

मरक्को जा पहुंची हैं। मध्य अटलस तथा ऊँचे एटलस पर्वत बीच में पर्दे का काम करते हैं। इसी कारण अल्जीरिया की सीमा के समीप पूर्वी स्टेपों में अरब लोग मिलते हैं।

मरक्को के अधिकांश निवासी बर्बर भाषा का प्रयोग करते हैं। नगरों के अतिरिक्त मरक्को के निवासी दो वर्ग में बँटे हैं। एक वर्ग खेती तथा रोजगार का काम करता है और दूसरा घूमने वाला खाना बदोश बना है। मध्य एटलस तथा और भी बहुत से बर्बर लोग बिना घर-द्वार के हैं। ऐसे लोग अपने खेतों की उपज नाज एकत्रित करने वाले गढ़ों में रखते हैं। अनाज एकत्रित किये जाने वाले गढ़ों को अगादिर कहते हैं। मरक्को में १ लाख यहूदी हैं। यहूदियों में प्राचीन तथा स्पेन वाले यहूदी हैं। गुलामों के व्यापार के कारण मरक्को के सूदानो लोग भी हैं जिनका प्रभाव दक्षिण के निवासियों के रंग पर गहरा पड़ गया है।

फ्रांसीसी छत्रछाया के पहले ब्लेड मकजेन और ब्लेड-सिबा लोगों में अन्तर था। ब्लेड मकजेन वह लोग थे जिनसे राजा कर लेने में सफल हो गया था और

ब्लेड-सिबा लोग राजा की आज्ञा का पालन नहीं करते थे और न कर ही देते थे। इन दोनों प्रकार के निवासियों के निवास-स्थान की कोई निश्चित सीमा न थी। बर्बर स्वतंत्र प्रकृति के थे वह किसी के बस में नहीं रहना चाहते थे इसलिये उपर्युक्त दोनों वर्गों में झगड़ा चलता रहता था।

१९३६ ई० की जनगणना के अनुसार फ्रांसीसी मरक्को की जन संख्या ६३ लाख ६० हज़ार है जिसमें ३ लाख ६१ हज़ार योरुपीय लोग हैं। स्पेनिश प्रदेश की जनसंख्या ६ लाख और अन्तर्राष्ट्रीय प्रदेश की जनसंख्या ७२ हज़ार है। पश्चिमी मैदानों की बस्ती अधिक घनी है। पर्वतीय प्रदेशों तथा उन स्थानों में जहाँ लोग निवास नहीं कर सकते जनसंख्या कम है। सहारा और अल्जीरिया के समीपवर्ती स्थान जहां सिंचाई नहीं हो सकती है वहाँ की जनसंख्या बहुत कम है।

रबात नगर की जनसंख्या ८४ हजार, मराकेस की १ लाख ८२ हजार, कैसाब्लांका की २ लाख ८५ हजार, फेज़ की १ लाख ४५ हजार, मेक्नेस की ३० हजार, सफी की २७ हजार, सालो की २१ हज़ार, उम्दा

की २० हजार, मजागन की २० हजार और मोगादर की १६ हजार है। स्पेनी प्रदेश में मेलीला की जन-संख्या ५२ हजार, टेट्वान की ४३ हजार, सेउटा की ४० हजार, एलक्सार की ४० हजार और लार्चे की २० हजार है। टैञ्जियर नगर अन्तर्राष्ट्रीय प्रदेश में है। उसकी जन संख्या ५६ हजार है।

उपज

मरक्को एक कृषिप्रधान देश है। समस्त देश की लगभग एक तिहाई भूमि खेती के योग्य है। एल-गर्ब, स्बू की घाटी शवीया, दुकक्ला के प्रान्त, मेक्नेस और फेज़ जिले और बेरा की घाटी में अच्छी खेती होती है। बर्बर लोग भूमध्य सागरीय किसानों की खोज में रहते हैं। क्योंकि वह बागबानी अच्छी करते हैं। जैतून, अंजीर, नारङ्गी और अनार की अच्छी उपज होती है। मरकेश, मेक्नेस, फेज़, वाज़न, शिशावेन और बेरा में जैतून के बगीचे बहुत हैं। मराकेश, सूस में बादाम की उपज होती है। टेट्वान, लारचे में नारंगी, एटलस पर्वतों पर बादाम और अखरोट होता है। ताफीलेल्त, ज़िज की घाटी, तोदाग, गेरिस फेक्ला, ड्रा और सूस मरक्को के मुख्य ओसिस (मरुद्वीप) हैं। ओसिस रेगिस्तान के भीतर हरे भरे स्थान को कहते हैं। तादला में मुख्यतः भेड़ें पाली जाती हैं। मरक्को में ६० लाख भेड़ें ३० लाख बकरियाँ, २ लाख घोड़े पाले जाते हैं। इनके अतिरिक्त ऊँट और खच्चर बहुत हैं।

मरक्को में गेहूँ, जौ, राई, मक्का, अल्सी, जौ आदि खूब पैदा होता है। सबसे अधिक उपज जौ और गेहूँ

की होती है। यहां ६ लाख मेट्रिक टन गेहूँ, ८ लाख टन जौ, ४० हजार जई, १ लाख ६२ हज़ार मेट्रिक टन मक्का और दस हज़ार मेट्रिक टन अलसी होती है।

मरक्को में तेज़ाबी नमक की खानों का पता लगा है जिनकी खोदाई केवल मरक्को की सरकार कर सकती है। यहाँ की तेजाबी नमक की खानें अल्जीरिया और ट्यूनिशिया से बढ़-चढ़ कर हैं। बाद-जेम, ताद्ला, कुरिंग और एल बुर्ज़ में तेज़ाबी नमक निकाला जाता है। फिगिग के पश्चिम नू आर्फा में मैंगनीज़ बहुत है। केनीफ्रा में लोहे, एटलस में सीसा, तांबा, जस्ता और टीन की खानें हैं। पेटिटजॉन के समीप पेट्रोल निकालने के लिये गहरी खुदाई (बोरिंग) की जा चुकी है। केनाडसा और उजदा के दक्षिण लोहे की खानें हैं।

आने-जाने के मार्ग

मरक्को में ४३५० मील लम्बी अच्छी सड़कें हैं। यह सड़कें बन्दरगाहों, फेज़, मरकेश और अल्जीरिया को मिलाती हैं। यहां ४६३ मील रेलवे लाइनें हैं। रेलों का प्रयोग सेना के लिये अधिक होता है। टैञ्जियर

से .फेज़ तक की रेलवे लाइन १६२७ ई० में खोली गई थी। इसका कुछ भाग टैञ्जियर प्रदेश, कुछ स्पेनिश प्रदेश और अधिकांश भाग फ्रांसीसी प्रदेश में है। कैसा-ब्लांका से फेज जाने वाली रेलवे लाइन रबात, केनिफ्रा, पेटिटजीन और मेक्नेस नगरों से होकर जाती है। पेटिट-जोन स्थान पर इस लाइन से टैञ्जियर-.फेज़ लाइन आकर मिल जाती है। तीसरी रेलवे लाइन कैसाब्लांका से मरकेश को जाती है। यह लाइन १६२८ ई० में बन कर तयार हुई। बर-रचीद से बाद-ज़ेम को एक शाखालाइन जाती है। फेज़ से उज्दा को भी एक रेलवे लाइन जाती है। बू आर्फा से उज्दा तक खनिज पदार्थ ढोने के हेतु एक रेलवे लाइन बनाई गई है। स्पेनी प्रदेश में नैरो-गेज लाइन लर्च स्थान को ज्वान-डे-लास-मिनास और टिस-टूटिन को मिलाती है।

टैञ्जियर स्थान पर भूमध्य सागर तट पर एक बन्दरगाह बनाया गया है। स्यूटा, मेलिला, जफारिनेस विला संजूरो आदि स्थानों पर बन्दरगाह बन गये हैं। अटलांटिक तट पर लरचे बन्दरगाह का सुधार किया गया है। यह लुक्कोस नदी के मुहाने पर स्थित है। कैसा-

स्त्रांका बन्दरगाह की अच्छी उन्नति की गई है। इस बदन्रगाह से फ्रांसोसी मरक्को का ८० प्रतिशत व्यापार होता है। मेहेदिया, केनिट्रा, स्बू, राबात, फडला, मज़गन साफी, मोगदोर बन्दरगाहों से दक्षिणी मरक्को का व्यापार होता है। मराकेश और अगादिर का व्यापार सूस बन्दरगाह से होता है।

व्यापार

मरक्को में बाहर से १,७६,५६,२४,००० फ्रैंक का सामान बाहर से प्रति बर्ष मंगाया जाता है और १,१४,३६,००,७०० का सामान बाहर भेजा जाता है। मुख्य आयात वाली वस्तुओं में चीनी, सूती कपड़ा, चाय, तेल, पेट्रोल, पिस्तौल, भिन्न भिन्न भांति की कलें और पुर्जे, मोटरकारें, लोहा और फौलाद का सामान और कोयला है।

बाहर भेजे जाने वाले पदार्थों में मुख्यतः तेजाबी नमक, अनाज, गेहूँ, जौ, अंडा, चमड़ा, ऊन, अलसी, भेड़ और दूसरे घरेलू पशु हैं। मरक्को का फ्रांस के साथ १५६२० लाख का व्यापार होता है। फ्रांस से

११२४० लाख का सामान मरक्को आता है और ४३८ लाख का सामान फ्रांस भेजा जाता है। स्पेन के साथ १६६० लाख का और इङ्गलैंड के साथ २६८० लाख का तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के साथ ११५० लाख का व्यापार होता है। फ्रैंक फ्रांसीसी चांदी की मुद्रा है। यह १० पेंस के बराबर होता है। एक पेंस लगभग एक आने के बराबर रोता हैं। स्पेनी मरक्को से १११० लाख का और टैञ्जियर प्रदेश से १७५० लाख का व्यापार होता है।

सेना

आधुनिक उच्च श्रेणी के देशों की भांति मरक्को के पास आधुनिक सेना नहीं है परन्तु वहां के निवासियों के पास जो कुछ पुराने अस्त्रशस्त्र हैं उसी की सहायता से वह आक्रमणकारी सेना का सामना करने में सफल होते हैं क्योंकि उनका देश बड़ा ही ऊँचा नीचा तथा दुर्गम है। अल्जीरिया और मरक्को में कितने ही आक्रमण-कारी तथा रक्षक युद्ध स्पेन और फ्रांस के विरुद्ध किये

जा चुके हैं। मगजेव, बोलवारा, ३ दाइया, अशरगाह, अशरदाह, गैंश, मल्चाज्रिया आदि जाति के लोग सेना में हैं। यह अच्छे घुड़सवार होते हैं अस्कारिया (पैदल सेना) भी है। पुरानी सेना अब सुल्तान की रक्षा का काम करती है।

अन्तिम रिफ युद्ध के समय से फ्रांसीसी रेजीमेन्ट जनरल फ्रांसीसी सैनिक प्रदेश की सेना को अपने अधिकार में रखता है। इसमें फ्रांसीसी तथा मरक्को निवासी सैनिक हैं। १६२७ ई० में मरक्को में ८५५२५ सैनिकों की सेना तोड़ दी गई है। स्पेनिश प्रदेश में फ्रांसीसी प्रदेश की भाँति ही सेना रखी गई है।

हनो के प्रीपलस के समय में मरक्को के तट पर कार्थेज की बस्तियां बसाई गई थीं। अंतिम सदी बी० सी० (ईसा के पूर्व) में मरक्को के बर्बर लोगों ने पाम्पी, सेरटोरियस और अगस्टस राजाओं के समय में उनकी सेना के लिये अपने यहां से सैनिक भेजे थे और मरक्को रोमन साम्राज्य का एक अंग बन गया था। पांचवीं सदी ई० में यह प्रान्त विंडल्स के अधिकार में हो गया था। उसके बाद अरब लोगों ने मरक्को पर अधिकार जमाया। ७३६ ई० में बर्बर जाति ने अरब लोगों के विरुद्ध बलवा किया और मैसारा उनका प्रथम स्वतंत्र राजा बनाया गया। उसके बाद मरक्को मिनास और बग़रावा राजाओं का शासन ६८८ ई० तक रहा। उसके पश्चात् मुराब्ती वंश के यूसफ प्रथम ने अपना राज्य स्थापित किया। ११४६ ई० में अब्दुल भूमिन ने मुराब्ती वंश को परास्त करके अपना शासन स्थापित किया। मराकेश नगर मुराब्ती राजाओं की स्मृति है। अब्दुल भूमिन मूर राजाओं में सबसे अधिक शक्तिशाली माना जाता है। उस समय मूर साम्राज्य अल्जीरिया, ट्यूनिस, ट्रिपोली, स्पेन और मिस्र तक फैला हुआ था।

उसके पश्चात् बेनी मारिन के वंश ने १२१३ ई० से १५२४ ई० तक शासन किया। इस वंश में अब्दुल हक़ अबूबकर, याकूब द्वितीय, यूसफ चतुर्थ आदि प्रसिद्ध राजे हुये। बेनी मारिन वंश के पश्चात् बट्टासी और सादी वंश ने शासन किया।

सोलहवीं सदी से मरक्को का योरुप के साथ व्यापार आरम्भ हुआ। मज़गन का बन्दरगाह पुर्तगाल के अधिकार में १७६९ ई० तक रहा। मोले स्माइल ने १६७२ से १७२७ ई० तक राज्य किया। इसके समय में मरक्को राज्य बड़ा संगठित बना रहा। फ्रांस के राजा लूई चौदहवें ने साली बन्दरगाह पर अपनी जल सेना भेज कर आक्रमण किया। मोली स्माइल ने लूई के साथ व्यापारिक सन्धि कर ली। उसके बाद इङ्गलैंड और हालैण्ड वाले भी मरक्को के साथ व्यापार करने लगे। १७३५ ई० में फ्राँस ने साली और लरचे स्थानों पर बम्ब वर्षा किया। १७६७ ई० में फ्राँसीसी दूत को मरक्को में और दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक अधिकार प्रदान किये गये। १८२२ से १८४९ ई० तक अब्दुर्रहमान ने शासन किया। १८५६ ई० से मरक्को पर ब्रिटेन का प्रभुत्व

अधिक हो गया। १८९४ ई० में अब्दुल अजीज़ चतुर्थ गद्दी पर बैठा और १९०८ ई० तक राज्य किया।

१९०४ ई० में फ्रांस और ब्रिटेन के मध्य संधि हुई जिसके अनुसार इङ्गलैण्ड ने फ्राँस को वचन दिया कि मरक्को के सम्बन्ध में वह किसी प्रकार का कार्य नहीं करेगा। उसी वर्ष फ्रांस और स्पेन में भी मरक्को के सम्बन्ध में समझौता हो गया। १९०५ ई० में जर्मनी ने भी रुकावट डाली जिसके कारण टैञ्जियर में किला बनाने की आज्ञा जर्मनी को प्रदान की गई। १६ जनवरी १९०६ ई० में अलजीयर्स की कान्फ्रेंस हुई और मरक्को में सभी लोगों को समानता के साथ व्यापार करने का अधिकार दिया गया।

मई १९१६ ई० को टैंजियर में एक फ्रांसीसी मार डाला गया। मार्च १९ सन् १९०७ ई० को डाक्टर एमीले मैम्चेम्प मराकेश में मार डाला गया। उज्दा पर फ्रांसीसी सेना ने अधिकार कर लिया। ३० जुलाई को कैसाब्लांका के बन्दरगाह में ९ योरुपीय काम करते हुये मार डाले गये। गलीली फ्रांसीसी क्रूशियर जहाज़ से सेना उतारी गई। इस पर विरोध किया गया जिसके

फलस्वरूप समस्त योरुपीय लोगों पर आक्रमण हो गया और नगर पर गोलेबारी हुई। उसके बाद फ्रांसीसी सेना ने शाकिया ज़िले पर अधिकार किया।

सितम्बर १६०८ ई० में कैसाब्लांका में ६ विदेशी सैनिक फ्रांसीसी सेना द्वारा पकड़ लिये गये। जर्मन सरकार उन्हें पकड़ लेने पर फ्रांसीसी सरकार को दुःख प्रकट करने के लिये कहा। उनका मुकद्दमा हेग की अदालत में आया। मई १६०६ ई० में अदालत ने फ्रांस के अनुकूल फैसला दिया जिससे फ्रांस और जर्मनी में सनसनी फैल गई। परन्तु ८ फरवरी १६०६ ई० को दोनों देशों में समझौता हो गया। इस समझौते में भी फ्रांस ने जर्मनी को समान व्यापारिक स्थान दिये और जर्मनी ने फ्रांस के राजनैतिक अधिकार स्वीकार कर लिये।

अगादिर कांड १९११:—

पहली जुलाई १६११ ई० को अगादिर में बम फटा। इस पर जर्मन रक्षा के लिये पैंथर जर्मन गनबोट अगादिर बन्दरगाह पर पहुँचा। इङ्गलैंड ने फ्रांस का पक्ष लिया और मरक्को में फ्रांसीसी राजनैतिक अधिकार

होने का पक्ष ग्रहण किया। ४ नवम्बर १६११ ई० को फ्रांस तथा जर्मनी के मध्य संधि हो गई जिसके अनुसार जर्मनी ने फ्रांस के कुछ राजनैतिक अधिकार स्वीकार किये। ३० मार्च १६१२ ई० को फ्रांस और मरक्को के बीच सन्धि हुई जिसके अनुसार मोलवी हफीद कुछ सुधार करने पर राजी हो गया। यह सुधार फ्रांसीसी प्रोटेक्टरेट के समान होने को थे। १८३०० वर्गमील भूमि स्पेन ने फ्रांसीसी छत्रछाया में होने की स्वीकृति भी एक फ्रांसीसी-स्पेनी संधि के अनुसार कर ली। १७ अप्रैल १६१२ ई० को फेज़ में बलवा हुआ जिसमें ४२ सैनिक, १३ फ्रांसीसी अफसर और १३ नागरिक मारे गये। सितम्बर १६१२ ई० में मराकेश नगर पर फ्रांस ने अधिकार कर लिया। १६१३ ई० के बसंत काल तक फ्रांस ने फेज़ और पश्चिमी मरक्को पर अधिकार जमा लिया। टाज़ा के प्रसिद्ध स्थानों पर मई १६१४ ई० में और जून मास में केनिफ्रा पर फ्रांसीसी सेना ने अधिकार जमाया।

मरक्को और गत महायुद्धः—

गत महायुद्ध के आरम्भ होने पर मरक्को की फ्रांसीसी

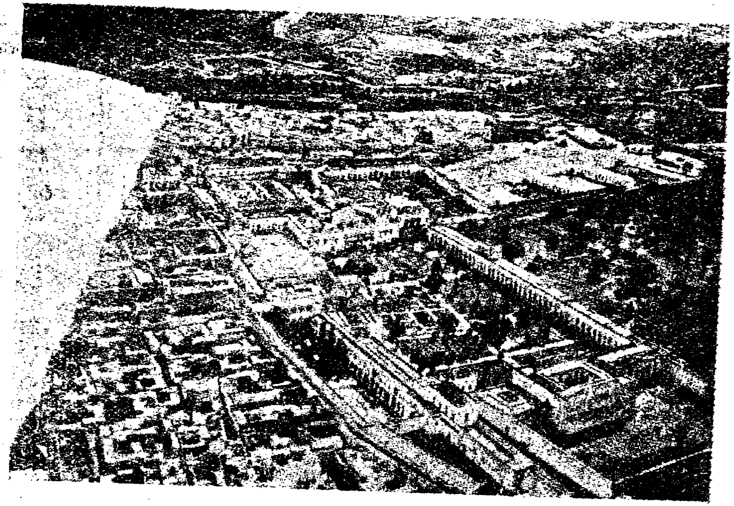

फेज़ में मरक्को के सुल्तान के महल का एक विहंगम दृश्य। जब से सुल्तान ने रबात में नया महल बनवा लिया है तब से वह वर्ष में केवल एक बार आता है।

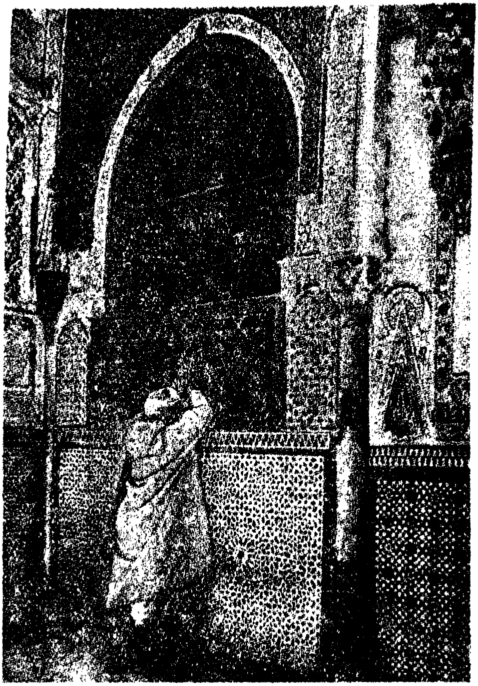

मरक्को राज्य के संस्थापक मौले इद्रीस मस्जिद का एक दृश्य।
एक दीनदार छेद में अपने दान का सिक्का छोड़ रहा है।

सेना के प्रधान सेनापति को फ्रांसीसी परराष्ट्र मन्त्री तथा युद्ध-मन्त्री का तार मिला कि वह तटीय प्रदेश पर अपना अधिकार स्थापित करे भीतरी प्रदेश को छोड़ दे और अधिक से अधिक सेना फ्रांस भेजे। इस आज्ञा के अनुसार ल्योटी ने ३७ बटालियन सेना फ्रांस भेजी परन्तु भीतरी प्रदेश को छोड़ने से इन्कार कर दिया। टाज़ा और जायाँ की प्रजा ने फिर बलवा कर दिया पर टारूडंट, टिजनिट और दक्षिणी प्रदेश के शासक फ्रांस के मित्र बने रहे। स्पेनी प्रदेश में जर्मन दूत अपना प्रचार करते रहे। वह फ्रांसीसी छत्रछाया के प्रतिकूल प्रचार कर रहे थे। १९१५ और १९१६ ई० में बादवेर्गा में जर्मनी के रुपये पर फ्रांस के विरुद्ध प्रचार चलता रहा। मार्च १९१७ में एल हिबा की त्रिजान स्थान पर हार हुई जिससे उसकी सेना बिखर गई। १९१७ ई० के अन्त में टाफीलेल्ट पर पूर्णरूप से फ्रांस का अधिकार हो गया।

फिर भी ल्योटी के सैनिक कष्ट दूर नहीं हुये। युद्ध के समय में रिफ लोगों को फ्रांस का विरोध करने के लिये जर्मनी से सहायता मिलती थी। १९१९ ई० के

बाद यह स्पेन के विरोधी हो गये। १९२१ ई० में अब्दुल करीम ने (बनी उर्यागेल का पुत्र) अज्दिर में आकर सेना एकत्रित की और अज्दिर तथा मेलीला के मध्य जनरल सिल्वेस्ट्रे की सेना को परास्त किया। इससे स्पेन में १९२३ ई० में बड़ी गड़बड़ी उत्पन्न हो गई और वहाँ वैधानिक सरकार के स्थान पर सैनिक सरकार की स्थापना हुई। सैनिक सरकार का प्रधान जनरल प्रीमो डे रिबेरा बनाया गया। स्पेन की सेना मरक्को से हटाई गई और फ्रांसीसी सेना ने क्षत्रछाया वाले प्रदेश पर धीरे धीरे अपना अधिकार जमा लिया।

अप्रैल १९२२ ई० में अब्दुल करीम टाज़ा-उज्दा सड़क पर भीषण आक्रमण किया और जो लोग फ्रांस के राजभक्त थे वह मार डाले गये। वाज़न और टाज़ा को भय उत्पन्न हुआ परन्तु ल्यौटी ने वहाँ से सेना हटाने से इन्कार किया यद्यपि उसके सलाहकारों ने वहां से फ्रांसीसी सेना हटा लेने को सलाह दी। इस प्रकार उसने मरक्को में दूसरी बार फ्रांस का शासन स्थापित किया। यदि वह सेना हटा लेता तो फिर मरक्को में शायद फ्रांस के पैर जमने कठिन हो जाते। फ्रांसीसी प्रधान सेनापति

ने लगातार आक्रमण आरम्भ कर दिये। जुलाई मास में मार्शल पेतां मरक्को भेजे गये और जनरल नौलिन फ्रांसीसी सेना का प्रधान बनाया गया। २२ अगस्त को मार्शल पेतां मरक्को से लौटे। उसके बाद मैड्रिड में एक सभा हुई और फ्रांस तथा स्पेन मिलकर मरक्को के मामले को आपस में तय करने पर राज़ी हुये।

८ सितम्बर को अल्हूसेमास स्थान पर स्पेन की सेना उतार दी गई और स्याह स्थान पर एकत्रित की गई। शीतकाल होने के कारण सेना युद्ध आरम्भ नहीं कर सकी। इसी बीच मरक्को के ४० हज़ार निवासी सेना में भरती हो गये और ३० मई को टाज़ा स्थान पर अब्दुल करीम ने जनरल ब्वायचुर को आत्मसमर्पण कर दिया। अब्दुल करीम मेडेगास्कर भेज दिया गया। १७ नवम्बर १९२७ ई० को मुलाई मोहम्मद मरक्को के सुलतान बने।

आधुनिक स्थिति

स्पेनी प्रदेश में अब्दुल खालिक तोरसे ने मरक्को में राष्ट्रीय प्रचार किया फिर भी देश में किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं उत्पन्न हुई। १९३७ ई० के अन्त में राष्ट्रीय आन्दोलन आरम्भ हुआ जिसके फल स्वरूप राष्ट्रीय विचार के लोग गिरफ़्तार कर लिये गये। १९३८ ई० के आरम्भ में राष्ट्रीय नेताओं को छोड़ कर सभी लोग जेल से बाहर कर दिये गये। जुलाई से दिसम्बर मास तक मरक्को की कौंसिल की बैठक रही। इस बैठक में ६० प्रसिद्ध मुसलमान नेताओं ने सरकार के साथ मिल कर कार्य करने का विचार प्रकट किया। १९३८ ई० में मरक्को की आर्थिक स्थिति का सुधार करने के लिये कई नियम बनाये गये। एक नियम सरकार की ओर से ऐसा बनाया गया जिसके फल स्वरूप साधारण किसान तथा रोज़गारी को ऋण के बदले में असाधारण समस्या उत्पन्न होने पर ही जेल भेजा जा सकता है। देशी प्राविडेंट संस्थाओं ने खेती करने वालों के लिये ऋण देने की व्यवस्था बना दी जिससे किसानों की

बड़ी सहायता हुई। जलज विद्युत द्वारा भूमि की सिंचाई करने की योजना बनाई गई और ९८८४० एकड़ टाडला की मरुभूमि को ऊमर राबिया के जल से सींचने का प्रबन्ध किया गया। यहाँ देशी बस्तियाँ बसाने का प्रबन्ध किया जा रहा है।

शिक्षा के प्रसार होने के कारण सरकार की ओर से अधिक से अधिक मरक्को लोगों को सरकारी नौकरी में स्थान देने का कानून बनाया गया है। अरबी भाषा में ब्राडकास्ट का कार्य भी होने लगा है।

अटलस पर्वतों और भूमध्य सागर के मध्य मरक्को का सबसे अधिक उपजाऊ भाग मेसीटा का मैदान है। इसमें दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर नदियां बहती हैं। इनमें सेमू, बायु-रेग-रेग और सौस नदियाँ हैं। इस मैदान में होकर तीन बड़ी सड़कें जाती हैं। पहली सड़क राबात से फेज और मेकनेस को जाती है। दूसरी कैसाब्लांका से मराकेश को जिसकी एक शाखा टारोंटांड और मगादिर को जाती है। इन सड़कों की सामूहिक लम्बाई ३३३५ मील है। टैञ्जियर फेज़ एकहरे रेलवे लाइन की एक शाखा पेटिटजीन से निकल कर कासा-

ब्लांका और मराकेश को मिलाती है। इस लाइन होकर आक्रमणकारी भीतर की ओर प्रवेश कर सकता है।

१५ जून सन् १९४० ई० से फ्रैंको-जर्मन क्षणिक संधि लागू की गई। मरक्को फ्रांसीसी छत्रछाया में है इसलिये वहाँ भी यह सन्धि लागू हुई। वहाँ का रेज़ीडेन्ट जनरल तथा प्रधान सेनापति जनरल नोग्वेस थे। विची सरकार के दबाव के कारण मरक्को को भी क्षणिक सन्धि की धाराओं का पालन करना पड़ा। जर्मन लोग वहां अपना प्रचार करने के लिये पहुँचे और अपना प्रभुत्व जमाया। जर्मन आज्ञानुसार मरक्को में न तो अधिक फ्रांसीसी सेना बढ़ाई जा सकती थी और न वायु सेना को ही दृढ़ बनाया जा सकता था यद्यपि वहां की फ्रांसीसी सेना जर्मन सैनिकों को शत्रु दृष्टि से ही देखती थी।

क्षणिक सन्धि के पश्चात् मरक्को में इटैलियन अफसरों को स्थान दिये गये जब लीबिया में इटली की पराजय हुई तो जर्मन कमीशन वहां पहुँचा और वह इस बात की तयारी करने लगा था कि मरक्को में जर्मन सेना रक्खी जावे। धीरे धीरे मरक्को में २०० जर्मन

अफसर तथा भांति भांति के दूसरे विशेषज्ञ भी पहुँच गये और व्यापारिक यात्री विद्यार्थी आदि के भेष में पंचम सेना का काम करने लगे।

मरक्को पर जर्मनी की आँखें बहुत समय से लगी हैं। इसका मुख्य कारण वहां की उपजाऊ भूमि, मैंगनीज़ और तांबा है। मरक्को की उपज तथा खनिज सम्पत्ति, जर्मनी के लिये बड़े ही उपयोगी हैं। फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका तथा डाकर से आने वाले जहाज मरक्को के बन्दरगाहों पर ही ठहरते हैं।

जर्मन प्रचारक मरक्को में राष्ट्रीयता का प्रचार करते हैं और उन्हें स्वतन्त्रता की लालसा देते हैं। मरक्को के मुसलमान सैनिक जो जर्मन के यहां कैद थे उनके साथ जर्मनों ने अच्छा व्यवहार किया और उन्हें मुक्त कर दिया। वह मरक्को में जर्मन धन पर जर्मन प्रचार करने के लिये भेजे गये।

विची सरकार द्वारा प्राप्त हुये समाचार के अनुसार अमरीकन सेना ने सफी, मगादोर, अगादिर और फेधाला स्थानों पर अधिकार प्राप्त कर लिया। सफी अटलांटिक सागर पर मरक्को का नगर है यह

कासाब्लाँका से १३२ मील दक्षिण और ६० मील मराकेश से पश्चिम की ओर है। मराकेश मरक्को की राजधानी है। अगादिर के ७० मील उत्तर की ओर मोगादोर है। यहीं से कनारीस और कदीरा को समुद्री मार्ग जाता है। फेधाला स्थान कासाब्लांका से १८ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेना के उतरने पर फ्रांसीसी सेना ने उसका विरोध किया जिसके फल स्वरूप उनमें युद्ध आरम्भ हो गया।

चूंकि अमरीकन सेना मरक्को, अलजीरिया और ट्यूनिस में उतारी गई है और यह तीनों फ्रांस के ही अधिकार में हैं इसलिये जर्मन सेना ने अनअधिकृत फ्रांस पर भी अधिकार जमा लिया और क्षणिक संधि की शर्तों को तोड़ दिया। १० नवम्बर को आहात और कासाब्लांका पर भी अमरीकन सेना ने अधिकार जमा लिया। बेगां, डार्लिन और दूसरे फ्रांसीसी जनरल को कहा जाता है कि वह मित्र राष्ट्रों की सेना के साथ हाथ बँटा रहे हैं परन्तु पेतां ने अफ्रीका के फ्रांसीसी उपनिवेशों की सेना को आदेश दिया है कि वह आक्रमणकारियों का सामना

करे। इसलिये विची सरकार के आज्ञानुसार फ्रांसीसी सेना कहीं कहीं पर अमरीकन सेना का विरोध कर रही है परन्तु फिर भी अमरीकन सेना लगातार आगे सफलता पूर्वक बढ़ती जा रही है।

मैकनेस, मराकेश और कासाब्लाँका और दक्षिणी जिले मरक्को के सैनिक क्षेत्र हैं। वहां का प्रधान सेनापति जनरल बर्गेस है। उसका केन्द्र राबास है। मरक्को की हवाई सेना में कई सौ वायुयान हैं। हवाई सेना का सेनापति जनरल ड, आस्टीर है। हवाई सेना के अड्डे फ़ेज़, राबात, कासाब्लांका, मिडेल्ट, मराकेश और मोगादोर हैं। मरक्को के जल सेना के जहाज़ कासाब्लांका के जहाज़ी अड्डे पर रहते हैं। वहां एक जहाज ३५ हज़ार टन का ७ या ८ विध्वंस कारक जहाज कुछ टार्पीडो नावें तथा १५ पनडुब्बी नावें हैं। जर्मन सरकार स्पेन की सरकार पर जोर डाल रही थी कि वह जर्मन सेना को मरक्को जाने का मार्ग दे दे जिससे जर्मन सेना वहाँ जाकर डाकर पर अड्डा जमावे और अटलांटिक सागर को संकटमय बनाकर मित्र राष्ट्रों के आने-जाने वाले मार्ग में बाधा उत्पन्न करे।

देश दर्शन

जर्मन प्रचार का ब्रिटिश तथा अमरीकन सरकारें भलीभांति अध्ययन कर रही थीं। जन डो गाल भी फ्रांसीस अफ्रीकन देशों पर अपना अधिकार जमाने की बाट में लगा था। जब लीबिया में जनरल रोमेल की विजय हुई और तोब्रक ब्रिटिश हाथों से निकल गया तो रूस की संकटमय स्थिति हो गई वहां से और मित्र देशों से द्वितीय युद्ध-क्षेत्र की पुकार गूंजने लगी तो ब्रिटिश तथा अमरीका की सरकारें चुप न रह सकीं। जनमत की मांग स्वीकार हुई और ८ नवम्बर को अमरीकन जनरल डवीट ईसेनहोवर के सेनापतित्व में एक लाख चालीस हज़ार अमरीकन सेना उत्तरी अफ्रीका के फ्रांसीसी बन्दरगाहों पर उतार दी गई। सफी, फेदाला और मेदिया मरक्को के बन्दरगाह हैं इन पर भी अमरीकन सेना उतारी गई। बौजनीका बन्दरगाह से भी अमरीकन सेना उतरी। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के संदेश के पर्चे फ्रांस तथा उत्तरी अफ्रीका के फ्रांसीसी नगरों में गिराये और कहा कि शीघ्र ही अधिक से अधिक अमरीकन सेना वहाँ पहुँच जावेगी।